हिन्दी पत्रकारिता का गौरवशाली इतिहास और बंगाल

डॉ.अम्बर कुमार चौधरी
सहायक प्राध्यापक ,हिन्दी विभा,
रवींद्र भारती विश्वविद्यालय संपर्क - रवींद्र भारती विश्वविद्यालय ,हिन्दी विभाग ,56A, B.T. Road Kolkata - 700050,
Mobile No. - 9681717106 ,Email - kumarambar89@gmail.com

सारांश - यह शोध पत्र हिंदी पत्रकारिता के गौरवशाली इतिहास में बंगाल (विशेष रूप से कोलकाता) की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। भारत का प्रथम हिंदी समाचार-पत्र **'उदन्त मार्त्तण्ड'** (30 मई 1826) कोलकाता से ही प्रकाशित हुआ था, जिसके संपादक युगल किशोर शुक्ल थे। राजा राममोहन राय को हिंदी पत्रकारिता का स्तंभ मानते हुए लेखक ने 'संवाद कौमुदी' और 'बंगदूत' जैसे प्रयासों का उल्लेख किया है। शोध पत्र में 19वीं और 20वीं शताब्दी के प्रमुख हिंदी समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं (जैसे समाचार सुधावर्षण, भारतमित्र, सार सुधानिधि, उचितवक्ता, विश्वमित्र, विशाल भारत, मतवाला आदि) का विस्तृत वर्णन है, जो लगभग सभी कोलकाता से प्रकाशित हुए। लेखक सिद्ध करता है कि बंगाली बुद्धिजीवियों और कोलकाता की बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक परिस्थितियों ने हिंदी पत्रकारिता के विकास में अनमोल योगदान दिया। आजादी के बाद भी पश्चिम बंगाल में हिंदी पत्रकारिता की परंपरा निरंतर चली आ रही है। शोध पत्र का मूल प्रतिपाद्य यह है कि **कोलकाता हिंदी पत्रकारिता की जन्मभूमि** है और बंगाल ने इसके विकास में अग्रणी भूमिका निभाई।

बीज शब्द-हिंदी पत्रकारिता,बंगाल/कोलकाता,उदन्त मार्त्तण्ड,युगल किशोर शुक्ल,राजा राममोहन राय,संवाद कौमुदी,भारतमित्र,विशाल भारत.स्वाधीनता आंदोलन,बंगाली योगदान।

पत्रकारिता और साहित्य जनजागरण की दो दिशाएँ ही नहीं हैं, जनकल्याण का अंतिम लक्ष्य भी हैं। पत्रकारिता की आत्मबोधक साहित्यिक दृष्टि पत्रकार के विवेकधर्म की कल्पना शक्ति है। साहित्य की तरह पत्रकारिता के केंद्र में भी मनुष्य ही है; लेकिन पत्रकारीय व्यावसायिकता साहित्य का धर्म नहीं है। अंततः मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना, राष्ट्रीय मूल्य चिंता, सत्यनिष्ठा, खनन सूक्ष्मदृष्टि, धर्मनिरपेक्ष वैचारिक खुलापन, सांस्कृतिक प्रतिबद्धता, तथ्यात्मक विश्लेषण, चिंतन-मनन की गंभीरता, लोकमंगल की साधनावस्था, साध्य को पाने के लिए साधनों की पवित्रता, शोषण का प्रतिकार, सत्ता का सकारात्मक निषेध, संतुलित तटस्थता, रचनात्मक नीर-क्षीर विवेक दृष्टि, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि समकालीन यक्ष प्रश्नों के प्रति सचेत जागरूकता और निचले-से-निचले तबके तक पहुँचने की इच्छा शक्ति एक तरह से गूंगे की वाणी- इन सब का समरस सकार चिंतन ही पत्रकारिता है।

भारत में समाचारपत्र के प्रकाशन के लिए मुद्रण की तकनीक प्रेरणा बनी और एक अंग्रेज जेम्स आगस्ट हिक्की ने 29 जनवरी 1780 में भारत का पहला पत्र 'बंगाल गजट ऑफ कलकत्ता जनरल एडव्हरटाईजर' नाम से प्रकाशित किया। हिक्की ने अपने पत्र के माध्यम से हेस्टिंग्स प्रशासन की त्रुटियों की आलोचना भी की। कदाचित् भारत में पत्रकारिता की सही भूमिका का आरंभ भी इसी पत्र से हुआ। अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध आवाज उठाने वाले हिक्की को अंग्रेजों का कोपभाजन बनना पड़ा और उन्हें जेल की यातना सहनी पड़ी। 1785 से प्रकाशित हो रहा 'बंगाल जरनल' सत्ता समर्थक था, किन्तु हिक्की से प्रभावित होकर एक उत्तरी अमेरीका मूल के अन्य विदेशी पत्रकार विलियम हुआनी ने जब 1791 में इसके सम्पादक का पदभार ग्रहण किया तब से इसका स्वर बदल गया। हुआनी की आक्रामक छवि के कारण तत्कालीन सरकार ने उन्हें भारत से निष्काषित कर दिया।भारतीय भाषा में पत्रकारिता के लिए राजा राममोहन राय को पत्रकारिता का स्तंभ कहा जाता है। उनके प्रयासों से 1818 में 'बंगाल गजट' और 1820 में 'संवाद कौमुदी' तथा बाद में 'मिरातुल अखबार' भी प्रारंभ हुए उन्होंने ताराचन्द दत्त और भवानीचरण बनर्जी के संपादन में बांग्ला भाषा में पहला देशी पत्र 'संवाद कौमुदी' का प्रकाशन किया। बंगाल का कोलकाता शिक्षा और पत्रकारिता के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। कलकत्ता को हिंदी पत्रकारिता की जन्मभूमि होने का श्रेय प्राप्त है, क्योंकि हिंदी पत्रकारिता भवन-निर्माण का ऐतिहासिक कार्य कलकत्ता में ही हुआ।

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास पर यदि दृष्टिपात किया जाए तो यह विदित होता है कि बंगाल एवं बांग्ला भाषी लोगों ने हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में अनमोल योगदान दिया है। बंगाल का कोलकाता भारत में अंग्रेजी राज का केंद्र बना। कलकत्ता भारत का एक मात्र ऐसा महानगर है, जहाँ शुरू से ही यानी स्थापना के समय (24 अगस्त, 1690) से ही विभिन्न जातियों और समुदायों के लोग रहने लगे थे। "देवनागरी लिपि में छपाई का काम कलकत्ता में 1789 में शुरू हुआ था। कलकत्ता में हिंदी का प्रचुर साहित्य लिखा गया और धीरे- धीरे 'हिन्दुस्तानी' का स्थान हिंदी ने ले लिया है।"1 हिंदी पत्रकारिता को जन्म देने और छपाई का काम शुरू करने का श्रेय इसी कोलकाता महानगर को प्राप्त है। सदियों की गुलामी से जर्जर हुए भारतीय समाज में नए प्राण फूंकने के लिए साहस भरी पहल और अनथक संघर्ष करने वाले राजा राममोहन राय ने अपने अनुष्ठान को मुखर करने के लिए पत्रकारिता को माध्यम बनाया। हिंदी का पहला समाचार पत्र 'उदन्त मार्त्तण्ड' 30 मई 1826 ई. को कोलकाता से प्रारम्भ हुआ। 'उदन्त मार्त्तण्ड' के प्रकाशन की जानकारी प्रकट होने से पहले हिंदी समाचार पत्रों के इतिहास लेखक बाबू राधा कृष्ण दास ने 'बनारस अखबार' को हिंदी का पहला समाचार पत्र माना था। "उदन्त मार्त्तण्ड' को प्रकाश में लाने का श्रेय कोलकाता के शोध विद्वान ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय को है। मई 1931 ई. के 'विशाल भारत' में इनका 'हिंदी समाचार पत्रों की आरम्भिक कथा' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें उदन्त मार्त्तण्ड' के प्रवेशांक का चित्र भी छापा गया था। तब इतिहासकारों ने अपना मत बदला तथा 'उदन्त मार्त्तण्ड' को हिंदी का प्रथम समाचार पत्र माना।"2 ब्रजेन्द्रनाथ बनर्जी के लेख से ही सूचना मिलती है कि 16 फरवरी 1826 ई. को सरकार ने उनकी अर्थात युगल किशोर सुकुल की दरख्वास्त मंजूर करके उन्हें अखबार निकालने का लाइसेन्स दिया। यह एक साप्ताहिक पत्र था, जो 'कोल्हू टोला के आमड़तल्ला की गली के 37 अंक की हवेली' से 'हर सतवारे मंगल' को निकलता था। इसके प्रकाशक, संपादक और मुद्रक थे युगल किशोर सुकुल कानपुर निवासी थे। कलकत्ता की सदर दीवानी अदालत में वह पहले मुहर्रिर के पद पर काम करते थे, बाद में वकालत करने लगे। संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी जानने के बावजूद, उन्होंने हिंदी में पत्र निकाला 'उदन्त मार्त्तण्ड प्रेस' से यह प्रकाशित होता था। शुक्ल जी ने अपने पत्र की प्रकृति और प्रवृति का संकेत इन शब्दों में किया है:

'दिनकर कर प्रगटत दिनहि यह प्रकाश अठयाम
ऐसो रवि अब उग्यो नहि, जेहि-जेहि सुख को धाम।

उत कमलनि विकसित करत बढ़त चाव चितवाम,
लेत नाम या पत्र का, होत हर्ष अरु काम।'

'उदन्त मार्त्तण्ड' 4 दिसम्बर, 1827 को बंद हो गया।अंक में संपादक ने लिखा था-

'आज दिवस लौं उग चुक्यौ मार्तण्ड उदन्त
अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अंत।'

इस पत्र को 2 रुपये महीने देकर पढ़ने वाले उदार हृदय पाठक नहीं मिले। सरकारी सहायता भी नहीं मिली। इस संबंध में कृष्णबिहारी मिश्र ने कहा है कि "कहना न होगा कि पं. युगलकिशोर शुक्ल ने ये पंक्तियाँ बड़ी व्यथा के साथ लिखी होंगी। यह भी कुछ विचित्र संयोग है कि हिंदी पत्रकारिता के उदय के साथ ही आर्थिक संकट का शुभ गृह उसके साथ लग गया जिसकी कुदृष्टि हिंदी पत्रकारिता पर सदैव लगी रही।"3 हरिहर दत्त के पहले से छप रहे फारसी पत्र 'जामे जहाँनुमा' को बाकायदा सरकारी सहायता मिलती थी। युगल किशोर सुकुल को जितना रंज इस बात पर था, उससे अधिक रंज अपनी भाषा के प्रति हिन्दस्तानी लोगों की उपेक्षा पूर्ण मनोवृत्ती से था। अंग्रेजी, फारसी तथा बंगला के लोगों ने अपने पत्रों को उठा कर जिस तरह अपने हृदय के सिंहासन पर बैठा दिया, हिंदी के लोग वैसा नहीं कर रहे थे। 'उदन्त मार्त्तण्ड' को 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' निकालना हिंदी नवजागरण का उद्धोष था, पर हिन्दस्तानी इस जागरण में अपने कारणों से व्यापक स्तर पर उत्साहपूर्वक हिस्सा नहीं ले प रहे थे। भारतेन्दु की 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल की पहली किरण उदन्त मार्त्तण्ड' में फूट चुकी थी। 'उदन्त मार्त्तण्ड' का अर्थ है- समाचार का सूर्य। कृष्णविहारी मिश्र ने ठीक ही कहा है कि- "हिंदी भाषी समाज की सक्रिय हित चिंता ही हिंदी पत्रकारिता की आदि प्रतिज्ञा है। 'उदन्त मार्त्तण्ड' के प्रकाशन की विज्ञप्त प्रेरणा हिंदी समाज के बहुमुखी अभ्युत्थान की चिंता रही है।"[4]

'बंगदत' की उपलब्धि हिंदी सामग्री के आधार पर इसका मूल्यांकन करना कठिन है। यह स्पष्ट है कि यह मूलतः बांग्ला का ही पत्र था जिसमें कचहरी की भाषा होने के कारण फारसी भी हमेशा रहती थी। हिंदी का व्यवहार कभी कभार काम पड़ने पर ही किया जाता था किन्तु संदेह नहीं कि राजा राममोहन राय द्वारा हिंदी को भी स्थान देना उनकी उदारता और दरदर्शिता का परिचय देता है। 'बंगदत' में विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित सामग्री एक-दसरे का अनुवाद नहीं होती थी। प्रत्येक 'भाषा की लिखावट अपने-अपने ढब पर अलग-अलग होती थी तथापि पत्र की मूल विषयवस्तु के संबंध में जानकारी के लिए बंगला अंकों पर दृष्टिपात किया जा सकता है। ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय ने 'संवादपत्रे शे कालेर कथा' के प्रथम खंड के परिशिष्ट में शिक्षा, साहित्य, समाज, धर्म और विविध शीर्षकों के अंतर्गत 'बंगदत' की विषयवस्तु का संकलन किया है। 'बंगदत' के उपलब्ध हिंदी अंश के आधार पर कहा जा सकता है कि देश- विदेश के राजनीतिक, व्यापारिक और शिक्षा संबंधी समाचारों को प्रकाशित करना इसका उद्देश्य था। व्यापारियों का व्यापार और उनका उपकार तथा' यूरोप की विद्या और उसकी शाखाओं की जानकारी देना इसके घोषित लक्ष्य थे। 'बंगदत' की भाषा के संबंध में आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि "राजा साहब की भाषा में एक-आध जगह कुछ बंगलापन जरूर मिलता है, पर उसका रूप अधिकांश में वही है, जो शास्त्रज्ञ विद्वानों के व्यवहार में आता था।"5 तत्कालीन हिंदी पर ब्रजभाषा का प्रभाव भी 'बंगदत' की भाषा से दृष्टिगोचर होता है।

9 जून 1934 को श्री ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय ने 4 जून 1834 को प्रकाशित हिंदी 'प्रजामित्र' (हिंदी) का उल्लेख किया। जिसके संबंध में बंगला पत्र 'समाचार दर्पण' के 21 जून 1834 का अंक में इसका वर्णन मिलता है। लेकिन इस पत्र की कोई प्रति उपलब्ध नहीं है। इसलिए इसके प्रकाशन पर संदेह होता है। सन् 1846 में 'मार्तण्ड' नामक पत्र की चर्चा अंबिका प्रसाद वाजपेयी ने किया। मौलाना नसीरुद्दीन के संपादन में 'मार्तण्ड' कोलकाता के इंडियनसन प्रेस से प्रकाशित होता था। यह पत्र पाँच भाषाओं में (अंग्रेजी, हिंदी, फारसी, बंगला तथा उर्द) में प्रकाशित होता था। यह एक साप्ताहिक पत्र था तथा दस पृष्ठों का था। इसी प्रकार 1849 में कलकत्ते से प्रकाशित होने वाला बंगला-हिंदी में एक पत्र 'जगद्दीपक भास्कर' का नाम लिया जाता था। हिंदी पत्रकारिता के मनु पं.युगुलकिशोर सुकुल ने 'उदन्त मार्तण्ड' के 23 वर्ष बाद सन् 1850 ई. में 'साम्यदन्त मार्तण्ड' (साप्ताहिक) का प्रकाशन किया जो कुछ ही अंकों तक सीमित रहा।

हिंदी का प्रथम दैनिक 'समाचार सुधावर्षण' एक बंगाली सज्जन श्यामसुंदर सेन के सम्पादन में बड़ाबाजार, कलकत्ता से जून 1854 ई. में प्रकाशित हुआ था। यह पत्र हिंदी और बंगला दोनों भाषाओं में सम्मिलित रूप से निकलता था। इसके अंक चार से छः पन्ने के होते थे। इसका आधे से अधिक भाग हिंदी में और बाकी बंगला में होता था। पत्र में हिंदी भाग पहले होता था और बंगला बाद में हिंदी भाग में मुख्य-मुख्य समाचार, लेख और संपादकीय वक्तव्य आदि दिए जाते थे, बंगला भाषा में विशेषकर व्यापारिक समाचार, बाहर से आने वाले जहाजों की खबरें, माल की आमदनी रफतानी, (आयात-निर्यात), विज्ञापन तथा कुछ संक्षिप्त समाचार रहते थे। कई पुस्तकों में समाचार सुधावर्षण का 1868 ई. तक निकलने का प्रमाण मिलता है। 1857 के स्वाधीनता संग्राम के तीन वर्ष पहले 'समाचार सुधावर्षण' का प्रकाशन आरम्भ हुआ था। "समाचार सुधावर्षण रविवार को छोड़कर सभी दिन निकलता था। इसका मासिक शुल्क एक रुपया था।"6 इसके समाचार को ध्यान से देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि समसामयिक घटनाओं पर टिप्पणी करने वाले और अंग्रेजों की आलोचना करने में यह पत्र चुकता नहीं था। 'समाचार सुधावर्षण' में विदेशों के समाचार भी दिए जाते थे। 'समाचार सुधावर्षण' में बंगालियों के अंग्रेजी के प्रति तीव्र आकर्षण और हिंदी भाषियों में अंग्रेजी की बढ़ती प्रतिष्ठा की भी सूचना मिलती है। यह तो साफ जाहिर है कि अंग्रेजी की साख बहुत बढ़ चली थी।

'बिहारबंधु' के प्रकाशन के लिए मदनमोहन भट्ट तथा केशवराम भट्ट ने बिहार में पहला हिंदी प्रेस सन् 1874 में कायम किया। इसी प्रेस से 'बिहारबंधु' का मुद्रण प्रकाशन पटना से होने लगा। "भाषा के प्रयोग को लेकर 'बिहारबन्धु' और 'भारतमित्र' में शास्त्रार्थ छिड़ा, जो उस समय के पत्रों में प्रायः होता था।"7 आगे चलकर 'भारतमित्र' का पहला अंक संवत 1935 ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा शुक्रवार 17 मई, 1878 को निकला। यह पत्रिका जब निकली थी, उस समय कलकत्ता से कोई दसरी पत्रिका नहीं निकल रही थी। 'भारतमित्र' के प्रथम अंक के प्रकाशन तिथि से केवल तीन दिन पहले यानी 14 मार्च, 1878 को 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' जारी किया गया था। वहीं 13 जनवरी, 1879 को कलकत्ते से 'सार सुधानिधि' का प्रकाशन सदानंद मिश्र के सम्पादन में हुआ। दुर्गा प्रसाद मिश्र की सम्पादन व प्रकाशन में मुख्य भूमिका थी। गोविंद नारायण मिश्र और शंभुनाथ मिश्र सहयोगी थे। यह उत्कृष्ट साप्ताहिक पत्र था। इसके तेवर फिरंगियों की कुचालों के विरोध में तीखे रहते थे। 'यमलोक की यात्रा' और 'मार्जार मूषक' जैसे लेखों के माध्यम से 'सार सुधानिधि' ने अंग्रेजों की रीति-नीति पर तीखे प्रहार किए।

हिंदी पत्रकारिता के उन्नायकों में दुर्गाप्रसाद मिश्र का नाम अग्रगण्य है। 'भारतमित्र' और 'सार सुधानिधि' जैसे पत्र उन्हीं की मेधा और श्रम-स्वेद के प्रतिफल हैं। तथापि, जल्द जल्द उन्हें इन पत्रों से किनारा कर लेना पड़ा। तब उन्होंने अपना पत्र 'उचितवक्ता' 7 अगस्त 1880 को कोलकाता से निकाला। योगेंद्रचंद्र बसु ने सन् 1890 में 'हिंदी बंगवासी' का प्रकाशन कोलकाता से किया और 'भारतमित्र' के पूर्व संपादक अमृतलाल चक्रवर्ती को सम्पादन का दायित्व सौंपा। 'हिंदी बंगवासी' प्रारम्भ से ही प्रतिक्रियावादी पत्र था जिसके कारण राष्ट्रवादी पत्रकारों ने पत्र से संबंध तोड़ लिया। कोलकाता से प्रसिद्ध बंगला पत्रकार पंडित कालीप्रसन्न काव्य विशारद ने सन् 1890 में 'हितवार्ता' का प्रकाशन किया। 'श्री समाज उत्तम करना विद्याबल विस्तार। जासे सुख संपत लहे अंत होय भव पार।' इस मुखवाक्य से शुरू होने वाले पत्र 'मारवाड़ी गजट' का पहला अंक 27 जून, 1897 को प्रकाशित हुआ था।

'मारवाड़ी गजट' के संपादक राधाकृष्ण टीवेडवाले थे। वे इस पत्र को 'उचितवक्ता' के प्रेस में छपवा कर 136 तुलापट्टी बड़ा बाजार से प्रकाशित करते थे। 'देवनागर' का प्रकाशन 1907ई. में एक लिपि विस्तार परिषद के तत्वाधान में जस्टिस शारदाचरण मित्र की प्रेरणा से हुआ था। इस मासिक पत्रिका के संपादक यशोदानन्दन अखौरी थे।'देवनागर' में बंगला, उड़िया, गुजराती, मराठी, कन्नड, तमिल, उर्दू आदि भाषाओं के लेख देवनागरी लिपि में ही छपते थे। 'नृसिंह' कलकत्ता से निकलने वाला हिंदी का यह पहला राजनीतिक मासिक पत्र था। इसके संपादक पं. अंबिका प्रसाद वाजपेयी थे। इसका पहला अंक नवम्बर, 1907 में निकला। यह किसी राजनीतिक दल कि हानि तो नहीं थी, पर विचारों से तिलक, अरविन्द तथा लाला लाजपत राय की राजनीतिक चेतना से ओत-प्रोत था। 'कमला' एक मासिक साहित्यिक पत्रिका है, जिसका पहला अंक जून, 1907 में निकला। इसके हर अंक में आत्मबलिदानी देशप्रेमियों की सचित्र जीवनी छपती थी। 14 अगस्त 1914 को कृष्ण जन्माष्टमी के दिन मारवाड़ी व्यापारियों की लिमिटेड कम्पनी ने चीनीपट्टी, बड़ा बाजार कोलकाता से दैनिक 'कलकत्ता समाचार' का प्रकाशन किया।

कोलकाता से सन् 1917 में हिंदी दैनिक 'विश्वमित्र' का प्रकाशन मूलचंद अग्रवाल ने किया। पत्र के संचालक-संपादक मूलचंद अग्रवाल और सहायक संपादक मातासेवक पाठक थे। पाठक जी बाद में संपादक हुए। सन् 1914 में 'विश्वमित्र' के मुंबई और दिल्ली संस्करण प्रकाशित हुए। 'स्वतंत्र' का पहला अंक 7 अगस्त, 1920 को प्रकाशित हुआ था। इसके संपादक थे अंबिका प्रसाद वाजपेयी जिन्होंने 'भारतमित्र' छोड़ने के बाद स्वाधीनता के तेज से भरा एक पत्र निकालने का यत्न किया। शिवपूजन सहाय के सम्पादन में प्रकाशित होने वाला सचित्र पत्र 'मारवाड़ी सुधार' कलकत्ता के बालकृष्ण प्रेस, 23, शंकर घोष लेन से छपता था। यह आरा (बिहार) के मारवाड़ी नवयुवकों का पत्र था। इसके प्रकाशन का भार नवरंगलाल तुलस्यान, व्यवस्थापक, 'मारवाड़ी सुधार समिति' आरा (बिहार) पर था। 'साहित्य' का पहला अंक हिंदी पुस्तक एजेन्सी से जून, 1922 में प्रकाशित हुआ। यह एक मासिक पत्रिका थी, इसके संपादक छविनाथ पाण्डेय थे। इसके कुल 6 अंक ही निकले। साहित्य की पत्रिका होकर भी 'साहित्य' में प्रकाशित लेखों, टिप्पणियों और विचारों का विषय क्षेत्र बहुत व्यापक था। 'समन्वय' का प्रकाशन काल सौर माघ सम्वत् 1978 (सन् 1922 ई.) से लेकर सौर पौष संवत् 1986 (सन् 1929) तक है। यह हिंदी पत्रकारिता की जन्मभूमि कलकत्ता के 23, शंकर घोष लेन में बालकृष्ण प्रेस से मासिक पत्र के रूप में निकलता था। इसके संपादक थे स्वामी माधवानन्द, जो रामकृष्ण मिशन के एक संन्यासी थे। आगे चलकर सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' मुंशी नवजादिकलाल एवं 'मारवाड़ी सुधार' के संपादक आचार्य शिवपूजन सहाय जैसे व्यक्ति भी इसमें आए थे। हिंदी में व्यंग्योक्तियों और विनोद शैली के कारण पृथक पहचान बनाने वाले लोकप्रिय साप्ताहिक 'मतवाला' का प्रकाशन 23 अगस्त 1923 को कोलकाता से महादेव प्रसाद सेठ ने किया। सितम्बर 1925 में विजयादशमी के दिन सचित्र हिंदी साप्ताहिक 'श्रीकृष्ण संदेश' का कोलकाता से प्रकाशन हुआ। चुन्नीलाल बर्मन प्रकाशक और लक्ष्मण नारायण गर्दे संपादक थे। 'बर्मन समाचार' का विलय 'श्रीकृष्ण संदेश' में कर दिया गया था। शिवपूजन सहाय और रमेशचंद्र त्रिपाठी के संपादकत्व में कोलकाता से सचित्र मासिक पत्रिका 'उपन्यास तरंग' का प्रकाशन सन् 1925 में हुआ। 'हिन्दू पंच' का प्रकाशन जून, 1926 के आखिरी सप्ताह में हुआ था। इसके प्रवर्तक थे राम लाल वर्मा तथा आदि संपादक थे ईश्वरी प्रसाद शर्मा। यह एक सचित्र साप्ताहिक था। इसके निरीक्षक थे पंडित कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय। इसका प्रकाशन बर्मन प्रेस, 371, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता से होता था। एक जनवरी 1928 को कोलकाता से 'माडर्न रिव्यू' के संपादक प्रशासक रामानन्द चट्टोपाध्याय ने हिंदी मासिक पत्रिका विशाल भारत' का प्रकाशन शुरू किया।

कोलकाता से तीन मार्च 1930 को सचित्र हिंदी साप्ताहिक 'लोकमान्य' का प्रकाशन हुआ। इसके संपादक-प्रकाशक रामशंकर त्रिपाठी थे। हिंदुस्तान के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पटल पर 1920-30 का काल स्वाधीनता आंदोलन के साथ-साथ नाना तरह के सुधारों का काल भी था। ऐसे समय में कलकत्ते से 'सरोज' का प्रकाशन अपने समय ही नहीं, परवर्ती काल के लिए भी काफी अहमियत रखता है। कोलकाता से हिंदी में प्रकाशित 'विजय' एक साप्ताहिक पत्र था जिसका पहला अंक अप्रैल, 1931 में आया है। नवम्बर 1931 में कोलकाता से डॉ. हेमचन्द्र जोशी तथा इलाचंद्र जोशी के संपादन में मासिक पत्रिका 'विश्ववाणी' का प्रकाशन हुआ। साहित्य परिशोधन इस पत्रिका का मुख्य ध्येय था। 'समाज सेवक' अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन की पत्रिका थी। इस पत्रिका के आमुख पृष्ठ पर अंग्रेजी में 'वीकली आर्गन ऑफ आल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन' छपा होता था। इस संस्था का कार्यालय 156, हरिसन, बड़ा बाजार, कलकत्ता में था। अगस्त 1937 में अर्जुनदेव बर्मन ने कोलकाता से विविध विषयों की हिंदी मासिक पत्रिका 'जीवन सफल' निकाली। कोलकाता से सितम्बर 1937 में हिंदी मासिक 'औघड़' का प्रकाशन हुआ। शिवशेखर द्विवेदी संपादक थे। वार्षिक शुल्क दो रुपये था। हास्य-व्यंग्य का साहित्यिक पत्र था। जनवरी 1942 में शांतिनिकेतन से गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की भावनाओं के अनुरूप हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वभारती' का प्रकाशन हुआ। हजारी प्रसाद द्विवेदी पत्रिका के संपादक थे। आजादी के बाद बंगाल में हिंदी पत्रकारिता का विकास तेज गति से हुआ है। प्रिन्ट मीडिया में प्रमुख समाचार पत्र 'सन्मार्ग', 'प्रभात खबर', 'वर्तमान पत्रिका', 'भारत मित्र', 'दृष्टि परख', 'राजस्थान पत्रिका', 'राष्ट्र रंग', 'सलाम दुनीया', 'साल्ट लेक संवाद', 'सामाज्ञा' 'सूत्रकार', 'विश्वामित्र', युवा शक्ति' 'झलक', 'जागरण', 'जनसत्ता' आदि हैं। आज वर्तमान समय में भी अपनी ऐतिहासिक परंपरा का निर्वाह करते हुए पश्चिम बंगाल की भूमि हिंदी पत्रकारिता के लिए उर्वरक एवं प्रेरक बनी हुई है।

निष्कर्ष-शोध पत्र के अंत में लेखक स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकालते हैं कि कोलकाता (बंगाल) हिंदी पत्रकारिता की जन्मभूमि और प्रेरणा स्रोत रहा है। अंग्रेजों की राजधानी होने के कारण कोलकाता बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक केंद्र बना, जहां हिंदी को भी विकास का अवसर मिला। 'उदन्त मार्त्तण्ड' से शुरू हुई हिंदी पत्रकारिता की यात्रा बंगाल की भूमि पर ही पनपी और फली-फूली। राजा राममोहन राय, युगल किशोर शुक्ल, दुर्गाप्रसाद मिश्र, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, शिवपूजन सहाय, निराला जैसे अनेक साहित्यकारों- पत्रकारों ने यहां से हिंदी पत्रकारिता को नई दिशा दी। आजादी के बाद भी 'सन्मार्ग', 'प्रभात खबर', 'वर्तमान पत्रिका', 'राजस्थान पत्रिका' आदि हिंदी समाचार-पत्रों के माध्यम से बंगाल हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक परंपरा को आगे बढ़ा रहा है। बंगाल की भूमि आज भी हिंदी पत्रकारिता के लिए उर्वरक और प्रेरक बनी हुई है। हिंदी पत्रकारिता का भविष्य लिखते समय बंगाल के इस ऐतिहासिक योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

****

संदर्भ सूची :-

1. नायर, परमेश्वरन थंकप्पन, हिंदी और उर्दू प्रेस का उदय हिंदी पत्रकारिता हमारी विरासत, खंड-2, प्रो. शंभुनाथ एवं द्विवेदी रामनिवास (सँपा.), वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम (वाणी) संस्करण 2012, पृष्ठ- 975.
2. श्रीधर, विजयदत्त, भारतीय पत्रकारिता कोश, खंड एक, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, परिवर्तित संस्करण 2010, आवृत्ती 2016, पृष्ठ-54, 55.
3. मिश्र, कृष्णबिहारी, हिंदी पत्रकारिता, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सातवाँ संस्करण-2011, पृष्ठ-57.
4. मिश्र कृष्णबिहारी पत्रकारिता इतिहास और प्रश्न, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 1993, 2004, आवृत्ती- 2013, पृष्ठ 21.
5. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:2002, पृष्ठ-309.
6. श्रीधर, विजयदत्त, भारतीय पत्रकारिता कोश, खंड-एक, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, परिवर्तित संस्करण 2010, आवृत्ती 2016, पृष्ठ-152.
7. वही, पृष्ठ-228.